

## Newspaper Clips

May 22, 2012

**Asian Age ND 22/05/2012**

**P-6**

# IIT exam: Signs of hope

**N**ews on higher education is like a silver lining amid the dark economic clouds. While it is heartening that more girls are cracking the IIT-JEE, still the benchmark of sound technical education in India, the surprising performance of a 12-year-old son of an illiterate Bihar farmer makes us even more sanguine. Given the very high ratio of men to women aspirants hoping to enter the IITs, it's not easy to beat the gender monopoly. Of those who cracked the test from western India, still the most successful in tackling the objective test designed to bring out students' innate abilities rather than learning by rote, over 10 per cent are girls.

The performance of Bihar's Super 30 institute is the icing on the cake. Its 90 per cent success rate helps it prove there's really no disparity in people's abilities, and it's only opportunity that tends to favour those better off economically. Many such "Super 30" institutes are now coming up across Uttar Pradesh and Bihar, and these are likely to do more to dismantle the system of class and economic advantage than all the reservations in place. The lesson is that there is a lot of talent in the country's young — and India will soon have the world's largest pool of young people — it's simply a matter of giving them the skills and guidance they need in order to realise their true potential. That is something institutes like Super 30 appear to be doing much better than governments.

Shah Times ND 22/05/2012 p-2

# आईआईटी में झंडे गाड़ रही लड़कियां



कानपुर। आईआईटी जेईई की प्रवेश परीक्षा वर्ष 2012 में पिछले वर्ष की तुलना में इस बार लगभग दोगुनी लड़कियों ने सफलता हासिल की है, यही नहीं मद्रास जोन से परीक्षा में शामिल हुई छात्रा इन 1 लड़कियों ने मेरिट लिस्ट

में 21वां स्थान भी प्राप्त किया है। आईआईटी कानपुर द्वारा जारी एक विज्ञापित के अनुसार देशभर की लड़कियां अब अधिक से अधिक संख्या में आईआईटी प्रवेश परीक्षा में शामिल हो रही हैं और उनका रुझान इंजीनियरिंग सेवाओं की ओर बढ़ रहा है। वर्ष 2011 में एक लाख आठ हजार 653 लड़कियां आईआईटी प्रवेश परीक्षा में बैठी थी, जिसमें से सामान्य वर्ग की करीब 1443 लड़कियों ने सफलता अर्जित की। वहीं वर्ष 2012 में आईआईटी प्रवेश परीक्षा में बैठने वाली लड़कियों की संख्या बढ़कर एक लाख 68 हजार 568 हो गई। जिसमें से 2886 लड़कियों ने सामान्य वर्ग में परीक्षा पास की और रैंक लिस्ट में अपना स्थान बनाया है। वर्ष 2012 में सामान्य वर्ग की टाप 100वां रैंक में तीन लड़कियां शामिल हैं, जबकि टाप 500वां रैंक में 33 लड़कियां शामिल हैं, टाप 1000वां रैंक में 78 लड़कियां शामिल हैं, जबकि टाप 2000वां

रैंक में 150 लड़कियां शामिल हैं। इसी तरह ओबीसी वर्ग में टाप 100 रैंक में चार लड़कियां, टाप 500 ओबीसी रैंक में 21 लड़कियां, टाप 1000 ओबीसी रैंक में 67 लड़कियां और टाप 2000 ओबीसी रैंक में 167 लड़कियां शामिल रहीं। वहीं, आईआईटी जेईई की टाप 100 एससी रैंक में नौ लड़कियां, टाप 500 एससी रैंक में 50 लड़कियां, टाप 1000 एससी रैंक में 101 लड़कियां शामिल हैं। इसी तरह टाप 100 एसटी रैंक में 11 लड़कियां, टाप 500 एसटी रैंक में 61 लड़कियां, टाप 1000 एससी रैंक में 122 लड़कियां शामिल हैं। आईआईटी मद्रास जोन से छात्रा इनाला जिवना प्रिया ने 21 वीं रैंक हासिल कर टाप रैंक हासिल की है। आईआईटी द्वारा जारी की गई लिस्ट में आईआईटी कानपुर जोन में शुभांगी वर्मा 263 रैंक, चाहत बाजपेई 474, इशु गोयल 682, आईआईटी बांबे जोन में मेघा गुप्ता 136 रैंक, स्नेहा दिलीप गोयनका 301, और

## ○बीते वर्ष के मुकाबले इस साल दोगुनी बालिकाओं ने अपनी प्रतिभा साबित की

अवनी तन्ना 306, शामिल हैं। आईआईटी दिल्ली जोन में पारुल जैन 116, अंजली राय 218, तथा अंकिता पारिचा 256, शामिल हैं। आईआईटी गुवाहाटी जोन में कविता कुमारी 1046 रैंक, अवनिका डे 1297, आकांक्षा 1812, शामिल हैं। आईआईटी खड़गपुर जोन में अनुशा चौधरी 250 रैंक, चिन्मई पणिग्रही 321, अनामिका अग्रवाल 737, शामिल हैं। आईआईटी मद्रास की टाप तीन में इनाला जिवना प्रिया 21 रैंक, अक्किम विनीता रेड्डी 32, व वसन्धम श्रीजा 62, शामिल हैं। आईआईटी रूड़की जोन में टाप तीन लड़कियों में जागृति सिंह 211 रैंक, खुशबू गुप्ता 239, तथा समीक्षा खिल्लन 731, रैंक शामिल हैं।

Mail Today, ND 22/05/2012 P-24-25

## Manage time to revise: IIT-JEE toppers' mantra

KAUSHIK ROY

By Sangeeth Sebastian



IIT-JEE topper Arpit Agarwal with his parents at a FIIT-JEE media briefing in Delhi

IIT-JEE TOPPER Arpit Agarwal repeatedly emphasised the importance of time management to succeed in what is considered to be one of world's toughest examinations.

"Balancing your time between school hours and competitive exams is crucial if you have to crack the exam," Arpit said in an interaction with the media at the FIIT-JEE coaching institute last week. Along with him at the briefing were his father, O.P. Agarwal, an assistant engineer with the Central Public Works Department, his mother Archana and sister Rashli.

Arpit stayed away from television to be able to complete his syllabus on time. "It left me with a lot of time for revision. I could also plan my preparations properly," Arpit said, adding that he spent five hours a day preparing for the JEE. "I had to cut down on my social life," he said, adding that he even gave up reading Dan Brown, his favourite author, during his preparations.

A student of Modern Vidya Niketan, Faridabad, Arpit informed that he was yet to settle on a specialisation. "I am toying with the idea of enrolling for Computer Science Engineering at IIT-Delhi," he said.

FIIT-JEE Director C.V. Kalyan

Kumar said coaching institutes such as his believe in making a difference in the way students understand and approach objective-type questions. "Even as we work on the IQ of each candidate, we also pay special attention to the holistic development of our students," Kumar said.

A total of 4,79,651 candidates appeared for the examination held on April 8. Of them, 24,112 secured ranks in various categories and 17,462 were shortlisted for counselling for admission to 9,647 seats in the 15 IITs, IIT-BHU Varanasi and Indian School of Mines, Dhanbad.

JEE Chairman G.D. Reddy has said that though the number of students expected to go for counselling at the various institutions will be more than twice the number of available seats, those who've secured ranks below 9,723 may not be called for counselling.

Economic Times, ND 22/05/2012 P-8

# Engineering Courses Change Gears

KENBELSON

Like many college students, Katherine Bovee, a master's degree candidate at Ohio State University, struggled to find a focus for her undergraduate studies. Wanting to sample a broad range of possibilities, she enrolled in a mechanical engineering programme. As of her junior year she still hadn't found the direction she was looking for, but things began to click when she signed up for courses in thermodynamics and internal combustion engines. Through her professor, Yann Guezennec of Ohio State's Center for Automotive Research, Bovee connected with the team working on the university's entry in EcoCAR, a green-

technology competition conducted by the Energy Department and General Motors.

"Everything I'm doing is based on what's in the automotive industry," said Bovee. As automakers increase their efforts to design vehicles that are more fuel-efficient and friendlier to the environment, engineering programmes are likewise adapting their curriculums, preparing students to build vehicles increasingly powered by batteries and managed by computers.

GM and other car companies hire about 80% of their interns because they are familiar with their development process and have shown they can work in groups, a critical skill in developing today's highly complex vehicles.

While established automakers and parts suppliers remain favoured destinations, a growing number of students are foregoing a bigger paycheck and more job security and going to work for startups and smaller companies, or in developing countries, where they can have greater influence, according to Margaret Wooldridge, director of the Automotive Engineering Program at the University of Michigan.

"There are personalities that don't want to go to a big, old stable company," Wooldridge said. "What's different now is the change-the-world attitude. They're very, very genuine and unusually willing to sacrifice."

New York Times

Punjab Kesari ND 22/05/2012 p-8

## लवली यूनिवर्सिटी के उभरते इंजीनियरों ने बनाई चालक रहित कार

जालंधर, (संवाददाता): कई वर्षों से भविष्य की चालक रहित कारों के बारे में हम सुनते आ रहे थे कि क्लिक व प्रोग्रामिक के माध्यम से हम हजारों मील दूर बैठे होने पर भी अपनी कार को चला पायेंगे। लवली प्रोफेशनल यूनिवर्सिटी ने इस दिशा में अपने विद्यार्थियों के कठिन प्रयासों से अब इस ओर कदम उठा लिया है और अपने इर्द-गिर्द सभी को इसके प्रति सिद्ध भी कर दिया है। इस संदर्भ में अपने पहले प्रयास में यूनिवर्सिटी के इलेक्ट्रिकल व कम्प्यूटेशन तथा मैकेनिकल इंजीनियरिंग के चारों विद्यार्थियों ने वायरलेस कम्प्यूटेशन टेक्नोलॉजी के ज्ञान का भरपूर लाभ उठाते हुए तथा अपने एलपीयू के गुरुजनों के दिशा-निर्देशन में सफलता पूर्वक एक ऐसी कार का डिजाइन तैयार किया है जिसे विश्व के किसी भी कोने में बैठे होने पर भी मात्र एक मोबाइल फोन से नियंत्रित किया जा सकता है।

कार को दोनों आटो और मैनुअल मोड से संचालित किया जा सकता है और जिस समय कार आटो मोड पर हो तो तब चाइल्ड लॉक जैसी सुविधायें भी उपलब्ध हैं। इस अवस्था में स्टियरिंग के पास बैठा कोई भी व्यक्ति इससे छेड़छाड़ नहीं कर सकता तब तक कि

■ दुनिया के किसी भी कोने में मोबाइल फोन से यह कार चलाई जा सकती है

दूर बैठे कार को सिग्नल देने वाले से संभव दू-बे बातचीत प्रणाली के माध्यम से उसे प्रार्थना न भेजी जाये। कथित कार का सफल परीक्षण 1000 किलोमीटर से भी अधिक तक कर लिया गया है तथा इस कार को रात तथा दिन दोनों समय संचालित किया जा सकता है।

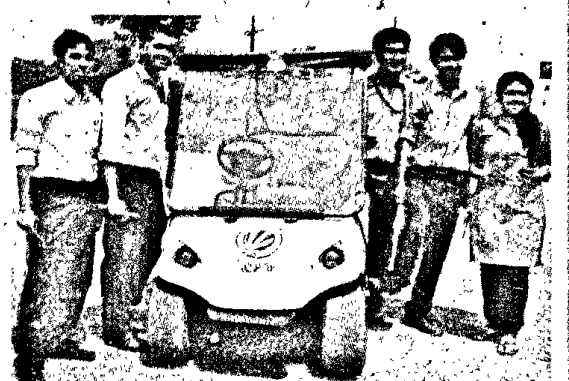
विद्यार्थियों की इस सफलता पर एलपीयू के कुलपति श्री अशोक मिश्र

ने कहा कि 'अश्वमेध' यह एक अलग प्रकार का आटोमोटिव अनुभव है। आटोमोटिव इंडस्ट्री की ओर यह अग्रणी प्रोजेक्ट है और संभवतः लोग किस प्रकार परिचालन कर सकते हैं, उस दिशा में नए अंदाज दे सकता है। उन्होंने कहा कि भविष्य की यह कार

विभिन्न प्रकार के सेंसर्स के प्रयोग से पदयात्रियों व अन्य अवरोधकों की आसानी से पहचान कर लेंगी, जिससे कारें अचानक धीमी गति में आ जाती हैं या रुक जाती हैं, क्योंकि एक कम्प्यूटर तीव्र गति से गणना कर सकता है इसलिए मानव की अपेक्षा यह नाममात्र की गलतियां भी नहीं कर सकता और जब ऐसी कारें आम ग्राहकों तक पहुंच जाएंगी तब दुर्घटनाओं में

बहुत कमी आ जाएगी।

इस तरह इस ड्राइवरलेस तकनीक से बहुत ज्यादा उत्पादक परिचालन संभव हो सकेगा, बहुत कम ट्रेफिक जाम होंगे, सुरक्षित यातायात होगा और मैत्रीपूर्ण वातावरण संचालित रहेगा। सफलता में उभरते हुए इस नई कार के डिजाइन करने वाले एलपीयू के आटोमोटिव इंजीनियरिंग विद्यार्थियों-विकास (एम. टैक ईसीई), लोकेश रमिना (बी.टेक ईसीई), राहुल जैन (मैकेनिकल इंजीनियरिंग) तथा सुवेंदु (मैकेनिकल इंजीनियरिंग) ने इस ड्रीम प्रोजेक्ट के बारे में ओर अधिक बताया- हम इस कारों के प्रति अपनी भविष्य की कार के प्रति अपनी



सफलता को प्राप्त कर अत्यंत प्रसन्न हैं। अपने बचपन के खिलौनों जैसे कि रोबोट्स प्रचालित छोटी-छोटी कारें आदि से प्रभावित होकर तथा चारों ने एकजुट होकर इंटरनेट, मोबाइल फोन, लैपटॉप, सी-प्लस लैंग्वेज प्रोग्रामिंग, एटमैगा 128 आईसी युक्त माइक्रो कंट्रोलर के साथ इलेक्ट्रिकल कंट्रोल सर्किट के माध्यम से इस वर्तमान कार को तैयार किया है।

Pioneer , ND 22/05/2012 P-5

**TOO FEW STUDENTS**

# AICTE okays closure of 150 pvt colleges

DEEPAK KUMAR JHA ■ NEW DELHI

Technical educational institutions, which have been mushrooming unchecked till now, are now on shaky ground. Nearly 150 private engineering and management colleges — making up for a whopping 12,000 seats - have shut shop. AICTE has granted approval to their request for closure after the institutions cited inability to fill up seats.

AICTE has already stopped giving approval to any new college till 2014 and is treading cautiously on the issue of granting deemed university status.

These institutes or colleges have not been managing to fill up their seats in different engineering and management courses during the last three to four academic sessions.

According to HRD Ministry sources, more than 200 technical institutions submitted applications for closure of courses due to various reasons, including poor admission. Of these, 143 have been permitted.

While Andhra Pradesh shut down a maximum number of 56 such institutions, 17 institutions from Uttar Pradesh were given the green signal for closure. If as many as 18 institutions in Rajasthan closed, then 13 in Gujarat, seven in Maharashtra, six each in Haryana and Punjab, four in Chhattisgarh, five each in Karnataka and Madhya Pradesh, two each in Tamil Nadu and Bengal, and one institution each in Uttarakhand and Bihar too were closed down.

## CLOSED AFFAIR

States	Engg/Mgmt Institutions closed in 2011-12
Andhra Pradesh	56
Uttar Pradesh	17
Rajasthan	18
Gujarat	13
Karnataka	05
Madhya Pradesh	05
Haryana	06
Punjab	06
Chhattisgarh	04
W Bengal	02
Tamil Nadu	02
Bihar	01
Uttarakhand	01

"Against this backdrop, the Government has put a check on growth of private engineering colleges. The total number of permissions granted to start new engineering colleges during 2009-10 was 250. It came down to 171 in 2010-11," said a source.

"AICTE has decided to consider proposals for establishing new institutions only from academic year 2014-15, that too after reviewing status on the basis of prospective plans received from State Governments. During the past year, only one of the 23 applications received was accorded a deemed university status," the source pointed out.

Business Line ND 22/05/2012

P-19

# Consultant appointed for proposed defence varsity in Haryana

**Press Trust of India**

*New Delhi, May 21*

Following the "in principle" approval to set up Indian National Defence University (INDU) in Haryana, the Government has appointed a consultant for preparation of detailed project report, layout plan and draft Act for the purpose, the Government told the Lok Sabha on Monday.

In a written reply to the House, the Defence Minister, Mr A.K Antony said, "The Union Cabinet, in its meeting held on May 13, 2010, has accorded 'in principle' approval to setting up the INDU at Binola in District Gurgaon, Haryana."

The Haryana Government has also issued the notification for the acquisition of land for the purpose, he said.

"Educational Consultants of India Ltd, (EdCIL), a public sector enterprise under the Human Resource Development Ministry has been appointed as consultant for the preparation of detailed project report, lay-

out plan and draft Act and statutes for setting up the university," the Minister said. On the cost of setting up the university, Mr Antony said, "An estimated expenditure of Rs 295 crore, at the rates of year 2010, for setting up the university and Rs 162 crore, at current rates, for the acquisition of land is likely to be incurred."

On the timeline, he said, "It is projected that the establishment of INDU and its constituents will be spread over seven years."

The University will conduct courses on subjects such as strategic studies, war gaming and simulation, neighbourhood studies, counter insurgency and counter terrorism, Chinese studies, evaluation of strategic thought. It will also undertake courses on international security issues, maritime security studies, Eurasian studies, South East Asian studies, material acquisition, joint logistics, national security strategy in peace and war, Mr Antony told the House.

Hindu ND 22-May-12

p2

# Team to inspect Metro heritage corridor

Sowmiya Ashok

**NEW DELHI:** A small team comprising officials from the National Monuments Authority (NMA), the Archaeological Survey of India and the Delhi Metro Rail Corporation will examine the various monuments lining the "heritage corridor" of the Delhi Metro.

"We had a discussion with the DMRC and a small team will be constituted to take a more detailed view of the monuments in the corridor," NMA member secretary Pravin Srivastava told *The Hindu* on Monday.

• **Team will comprise officials from National Monuments Authority, ASI, DMRC**

• **Will look into issues like structural impact on the monuments, location of stations, tunnels**

The team, which will have not more than three or four members, will look into issues such as the structural impact on the monuments, location of the stations, locations of tunnels and the importance of the monuments lining the corridor, said Mr. Srivastava.

The discussions followed

the demands of the NMA for a structural impact study to be carried out on the heritage corridor that forms part of Phase III of construction by the Delhi Metro. The NMA had asked the DMRC to ask either Indian Institute of Technology-Delhi or IIT-Roorkee to conduct the study. However, the DMRC replied that

neither of the institutions was willing to do so.

However, it is unclear whether the latest development will delay construction of the corridor which will connect Janpath metro station with Kashmere Gate and run adjacent to important heritage sites such as Jantar Mantar, Delhi Gate, Khooni Darwaza, Ferozeshah Kotla, Sunehri Masjid and Red Fort.

The Delhi Metro maintained that this was a routine meeting. "We do not have anything to say about the meeting," said a DMRC spokesperson.